चीनी-मिट्टी का बना आदमी

रिचर्ड

कभी शहर के किनारे एक कठोर आदमी अपनी एक डरपोक बेटी के साथ रहता था. बेटी अपने पिता की आज्ञा का पालन करते-करते एकदम पीली पड़ गई थी. आदमी, लड़की को हमेशा व्यस्त रखता था और उसे कभी भी दरवाजे के बाहर तक नहीं निकलने देता था. "तुम भाग्यशाली हो, तुम यहाँ घर पर सुरक्षित और स्वस्थ हो," उसने लड़की से कहा. "बाहर की दुनिया बड़ी मुश्किलों से भरी है - वहां पर तमाम तरह के लुच्चे-लफंगे, चोर और लुटेरे भरे हैं. तुम मेरी बात पर यकीन करो!" धीरे-धीरे लड़की पिता की बात मानने लगी.

प्रत्येक सुबह वह आदमी अपने बूढ़े घोड़े द्वारा खींचे गए छकड़े (गाड़ी) पर सवार होकर जाता था. वह पूरे दिन शहर की सड़कों का चक्कर काटता था और ग्रामीण इलाकों में टूटी-फूटी पुरानी फेंकी हुई चीज़ें खोजता रहता था. वह घर के पुराने टूटे सामान - बिना पैरों की मेज-कुर्सियाँ, पुराने बर्तन, और इधर-उधर का कबाड़ इकट्ठा करता था. फिर उसकी बेटी घर में अकेले रहकर उस कबाड़ की मरम्मत करती थी. उन सुधरी हुई चीज़ों को वो कबाड़ी फिर से बाजार में बेंचता था. इस तरह बाप-बेटी का जीवन चलता था.

उस दिन वो आदमी सुबह को घर से चला गया. जाते-जाते उसने अपनी बेटी को सामान्य हिदायतें और चेतावनी दीं. "अगर कोई सड़क पर गुजरे, तो तुम खिड़कियों से दूर रहना. अगर कोई दरवाज़ा खटखटाए तो बिल्कुल जवाब मत देना. मैं तुम्हें कई खराब वारदातें सुना सकता हूं." फिर वह चला गया. उसके बाद लड़की ने एक टूटी हुई लालटेन पर काम करना शुरू किया.

आज सुबह शायद उस आदमी का नसीब अच्छा था. जब वह एक अमीर आदमी के घर से गुजर रहा था, तभी एक अनाड़ी नौकरानी झाड़ू के साथ दरवाजे से दो बिल्लियों का पीछा करती बाहर निकली. उसकी टक्कर चीनी मिट्टी के एक बड़े फूलदान से हुई. फूलदान नीचे रास्ते पर लुढ़का और एक संगमरमर के खंभे से जाकर टकराया. उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए. वह आदमी रुककर यह सब देखता रहा. उसके बाद नौकरानी ने दरवाजा बंद कर दिया.

वो आदमी दस मिनट तक वहां पर इंतजार करता रहा. पर घर से कोई बाहर नहीं आया. फिर वो अपनी गाड़ी से नीचे उतरा और उसने टूटे हुए चीनी मिट्टी के फूलदान को इकट्ठा किया. उसने टुकड़ों को अपनी गाड़ी में धीरे से रखा और फिर जल्दी से घर की ओर चला.

उसकी बेटी, हमेशा की तरह घर में सुरक्षित थी. "यह बढ़िया चीनी मिट्टी का फूलदान है," आदमी ने कहा. "तुम जो कुछ भी कर रही हो उसे छोड़कर पहले इसकी मरम्मत करो. हमें इसकी अच्छी कीमत मिलेगी."
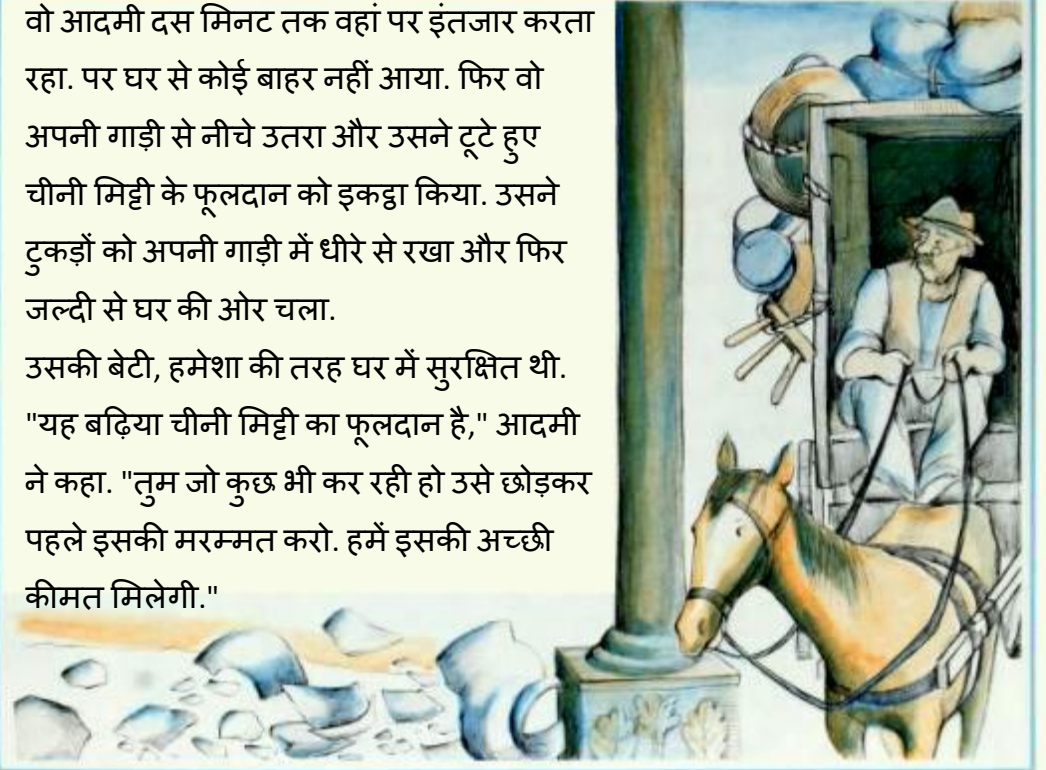
अभी बाहर काफी उजाला था इसलिए वो आदमी दुबारा से कुछ टूटा-फूटा खोजने के लिए बाहर चला गया. उसने दरवाजे पर रुककर लड़की को दुबारा चेतावनी दी, "अंदर रहना. बाहर हालात काफी खराब हैं. तमाम लुच्चे-लफंगे बाहर घूम रहे हैं." फिर वो चला गया. लड़की ने चीनी मिट्टी के फूलदान का एक टुकड़ा अपने हाथ में उठाया और उसकी सुंदरता को निहारा. उसने ध्यान से सभी टुकड़ों को एक कंबल पर रखा और उन्हें साफ़ किया. फिर, अपने अकेलेपन में गुनगुनाते हुए वो अपने काल्पनिक विचारों में खो गई. धीरे-धीरे उसने चीनी मिट्टी के फूलदान के टुकड़ों को एक-एक करके जोड़ना शुरू किया. उसने जल्दी-जल्दी और बड़े करीने से काम किया, भले ही उसके विचार कहीं और थे. कुछ घंटों के बाद वो देखकर बहुत चकित हुई कि उसने चीनी मिट्टी के टुकडों से एक पूर्ण आकार का आदमी बना डाला था. और उसी पल वो चीनी मिट्टी का आदमी उससे बोला :

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ," चीनी मिट्टी के आदमी ने उस लड़की की ओर एक कदम उठाते हुए कहा.

"अरे वाह!" लड़की ने आश्चर्य से कहा. उसने कंबल उठाकर उससे आदमी को ढंका. "अरे वाह!!" लड़की ने दुबारा कहा. इस बीच चीनी मिट्टी के आदमी ने लड़की को अपनी बाहों में भर लिया और उसे चूमा. जब यह हो रहा था तभी लड़की के पिता घर लौटा. और ठीक उसी क्षण उसने कमरे का दरवाजा खोला.

“अरे, यह क्या!" वह बौखलाया.

उसने एक कुर्सी को उठाया और उसे चीनी मिट्टी के आदमी के सिर के ऊपर मारा. जिससे चीनी मिट्टी का आदमी सिर से पैर तक चकनाचूर हो गया, और चीनी मिट्टी के टुकड़े फर्श पर बिखर गए.

"सर्वशक्तिमान ईश्वर!" आदमी ने रोते हुए कहा, "मैंने उसकी खोपड़ी तोड़ दी है!" लड़की के मुंह से एक दर्दनाक चीख निकली. तबाही से स्तब्ध होकर वो कबाड़ी अपने घुटनों पर गिर गया. फिर लड़की ने उसे समझाया कि वो कोई असली आदमी नहीं था, वो सिर्फ चीनी मिट्टी के टूटे बरतन से बना था.

"एक चीनी-मिट्टी के बरतन से बना आदमी जो चल सकता है!?"

"हाँ, और वह बात भी कर सकता था," लड़की ने कहा.

"बहुत खूब!" आदमी ने कहा था. "जल्दी करो, इससे पहले कि तुम भूलो, उसे दुबारा फिर से जोड़कर बनाओ. मैं उसके लिए एक पिंजरा बनाऊंगा और फिर उसे मेले में ले जाऊंगा. उसे देखने के लिए मैं सबसे एक-एक डॉलर की फीस लूंगा. अगर वो वह नाचना सीख गया तो मैं एक बड़ा बैनर लगाऊंगा 'आओ, चीनी-मिटटी के बर्तन को नाचते देखो!' उससे मैं हजारों डॉलर कमाऊंगा! तुम जल्दी से, बिना गलती किये उसे फिर से जोड़ो!”

उसके बाद लड़की ने कंबल पर चीनी-मिट्टी के सब टुकड़े एकत्र किए और धीरे-धीरे उन्हें फिर से एक साथ जोड़ना शुरू किया. उसके पिता भी वहीँ बैठ गए और उसे कुछ देर तक उसे देखते रहे, लेकिन उन्हें यह काम उबाऊ लगा और फिर वह सोने चले गए.

लड़की ने काम शुरू किया, लेकिन वो बहुत दुखी थी कि चीनी मिट्टी के आदमी को एक पिंजरे में बंद करके ले जाया जाएगा. इस विचार से वो इतनी दुखी थी कि उसने आखिरी टुकड़ा लगाने तक कुछ ध्यान ही नहीं दिया. अंत में उसने एक छोटा सा चीनी मिट्टी का घोड़ा बना डाला. घोड़े ने बनते ही तुरंत हिनहिना शुरू कर दिया.

तभी कबाड़ी की नींद खुली.
"अरे यह क्या है?" उसने पूछा. "यह कोई आदमी नहीं, यह तो घोड़ा है. अब तुम्हें इसे तोड़कर दुबारा जोड़ना होगा. और इस बार काम पूरे ध्यान से करना." यह कहते हुए आदमी ने घोड़े को तोड़ने के लिए कुर्सी को अपने सिर के ऊपर उठाया.
तभी घोड़े ने लड़की से कहा, "जल्दी से, मेरी पीठ पर कूदो!" लड़की ने वही किया, और एक सेकंड में घोड़े ने लड़की के साथ खिड़की से बाहर छलांग लगाई, और फिर वो सरपट दौड़ा. कबाड़ी अभी भी खिड़की से उन पर कुर्सी लहरहा रहा था और उन पर चिल्ला रहा था.

कई मील दौड़ने के बाद, घोड़ा एक छोटे मैदान में रुका, जिसके बीच में एक पेड़ था.

"नीचे उतरो," घोड़े ने कहा. लड़की ने वैसा ही किया. "अब," घोड़े ने लड़की से कहा, "मैं पेड़ से जाकर टकराऊँगा जिससे मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ, और फिर तुम मुझे फिर से एक आदमी के रूप में जोड़ देना." फिर घोड़े ने आगे कहा, "याद रखना - कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ."

और इससे पहले कि लड़की एक शब्द कह सके, घोड़ा पेड़ से जाकर ज़ोर से टकराया और उसके सैकड़ों टुकड़े हो गए.

यह देखकर लड़की दुखी हुई, और वो फिर पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगी, क्योंकि उसके पास वहां जोड़ने के लिए गोंद नहीं था.

तभी पास के रास्ते पर एक युवक, एक-पहिए की गाड़ी को धक्का देते हुआ जा रहा था. जब उसने लड़की को पेड़ के नीचे रोते हुए देखा, तो वो उसे दिलासा देने के लिए वहां रुक गया.
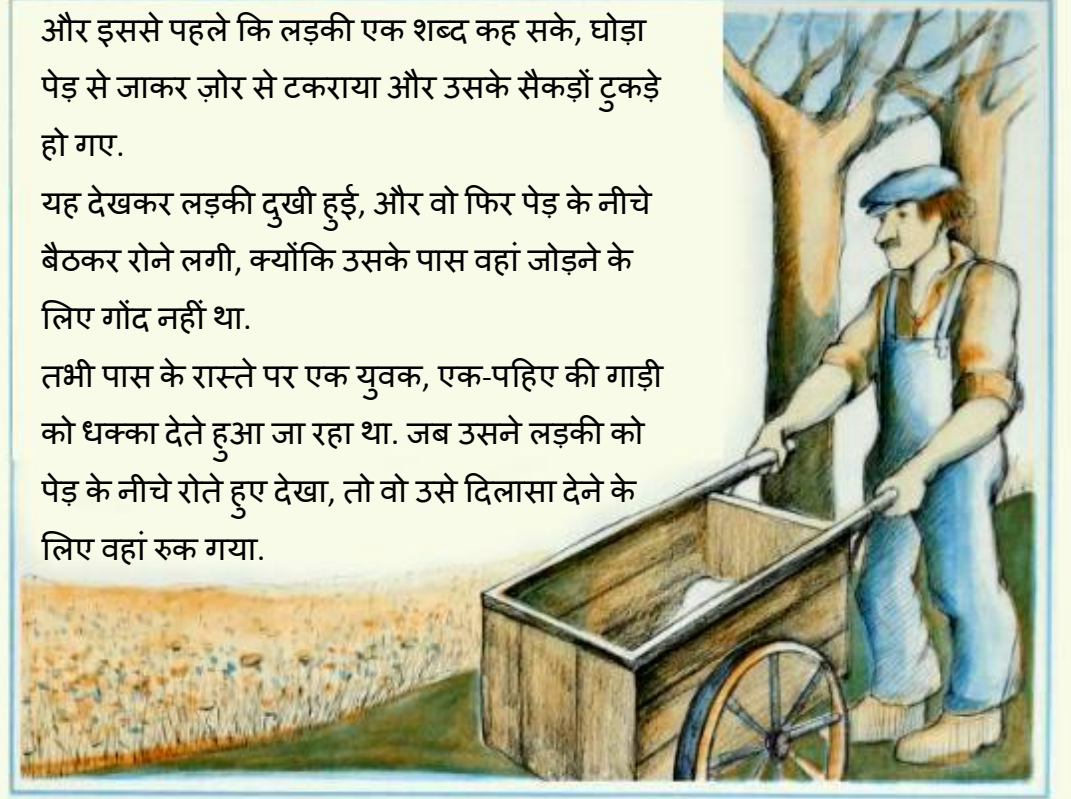
"रो मत," उस आदमी ने कहा. "चलो, हम टुकड़ों को इकट्ठा करके उन्हें ठेले में डाल देते हैं. तुम मेरे साथ घर चलो और फिर हम उन टुकड़ों को बिल्कुल नए तरीके से जोड़ देंगे." उसके बाद उन्होंने टूटे हुए चीनी-मिट्टी के टुकड़ों को ठेले में लादा और उन्हें लेकर वे उस आदमी के घर गए. वहां उन्होंने टुकड़ों को कंबल के ऊपर फैला दिया.
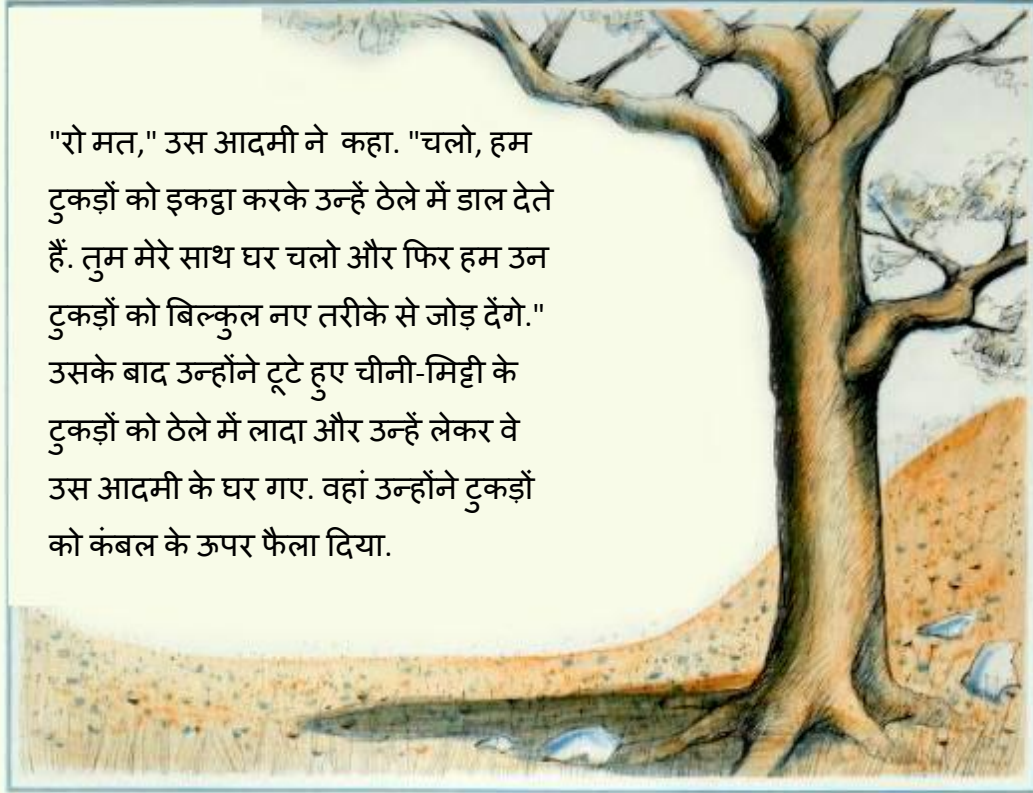
"यह टुकड़े कभी बर्तनों का एक सुंदर सेट रहा होगा," आदमी ने कहा, और फिर उसने कुछ टुकड़ों को एक साथ गोंद से जोड़ना शुरू किया. वे काम करते रहे और वे एक-दूसरे को अपने-अपने बारे में बताते भी रहे. लड़की ने युवक को प्रशंसा की निगाह से देखा. युवक ने अपने हाथों से बहुत मुस्तैदी से और सुन्दर काम किया था. और थोड़ी ही देर में दोनों ने एक-साथ मिलकर एक दर्जन प्लेटें, थालियां, छह कटोरे, दो बड़े डोंगे, एक दूध का जग और दो छोटी कटोरियाँ बना डालीं.

उसके बाद उन्होंने खाना बनाया. काम के दौरान दोनों की आँखें कई बार आपस में मिलीं. उनके हाथ भी एक दूसरे से छुए, और साथ में उनके जिस्म भी.

उन्होंने चीनी मिट्टी के टुकड़ों से बने बरतनों में खाना खाया. तभी जिस थाली में लड़की खा रही थी वो लड़की को देखकर बोली, "मैं अभी भी तुमसे प्यार करती हूं."

"चुप!" उसने कहा.

"माफ़ करें, क्या हुआ?" युवक ने पूछा.

"ओह, कुछ नहीं," लड़की ने कहा.

उसके बाद वे दोनों हमेशा के लिए खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे.